Online at: https://researchtrendsjournal.com ISSN No: 2584-282X

INTERNATIONAL JOURNAL OF TRENDS IN EMERGING RESEARCH AND DEVELOPMENT

INTERNATIONAL JOURNAL OF TRENDS IN EMERGING RESEARCH AND DEVELOPMENT

Volume 2; Issue 6; 2024; Page No. 45-47

Received: 14-08-2024
Accepted: 29-10-2024

प्रकृति चित्रण के परिप्रेक्ष्य में चित्रकार वीरेश्वर सेन

रुचिन वर्मा

चित्रकला विभाग, धर्म समाज कॉलिज, अलीगढ, राजा महेन्द्र प्रताप सिंह राज्य विश्वविद्यालय, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश भारत

Corresponding Author: रुचिन वर्मा

सारांश

लखनऊ की कला और संस्कृति की महिमा का स्वर उत्तर प्रदेश में ही नहीं अपितु भारत–भर में सुनाई पड़ता है। जिस प्रकार लखनऊ का कत्थक घराना प्रसिद्ध है, उसी प्रकार यहाँ की कला और शिल्प भी, जिसके अन्तर्गत चित्रकला, बाटिक कला और छापाकला आदि आती हैं, भी अपना विशेष स्थान रखती हैं। उत्तर प्रदेश की कला की सृजन–प्रक्रिया में नित्य ही नया परिवर्तन हुआ है। एक ओर जहॉ कला की संरचनाएँ बदली हैं तो वहीं दूसरी ओर कला को अनुभूति के माध्यम से ग्रहण करने वाले दर्शक की दृष्टि और बोध में भी परिवर्तन आ रहा है। यहाँ की समकालीन दृश्य–कला पर प्रकाश डालें तो ज्ञात होता है कि स्वतंत्रता पूर्व एवं स्वातंत्र्योत्तर काल में चित्रकार निरन्तर अपनी जड़े खोजने की प्रक्रिया में लगे हुए थे। ऐसे चित्रकारों में स्व0 वीरेश्वर सेन का नाम प्रादेशिक दृश्य चित्रकला के इतिहास में प्रमुखता से लिया जा सकता है जिन्होनें न सिर्फ दृश्यचित्रण की परिभाषा बदली बल्कि उसके विभिन्न आयामों को एक नए रूप में प्रस्तुत किया।

मूलशब्द: समकालीन कला, वाश पद्धति, टैम्परा, आकृतिमूलक, परिप्रेक्ष्य, निसर्ग, बंगाल स्कूल, कला एवं संस्कृति।

प्रस्तावना

कला तो प्रत्येक व्यक्ति के भीतर निहित होती है, पर उसे परिष्कृत करने की आवश्यकता होती है। इसके लिए कला–विद्यालय होते हैं, कलाचार्य होते हैं और होती है–प्रकृति, जो संवेदना को सिंचित करती है। वस्तुतः यह संवेदना ही व्यक्ति को कलाकार बनाती है और प्रेरणा देती है। हल्दार साहब ने लखनऊ कला विद्यालय को जिन कला–रत्नों से समृद्ध किया था, उनमें वीरेश्वर सेन का नाम अविस्मरणीय है। सेन साहब का जन्म कलकत्ता में एक उच्च शिक्षित परिवार में सन् 1897 ई0 को हुआ था।[1]

बाल्यावस्था से चित्रकला में रूचि एवं प्रतिभा होने के बाद भी आप कला की औपचारिक शिक्षा नहीं ले पाएं। वीरेश्वर सेन बी0ए0 करने के उपरान्त अवनीन्द्रनाथ टैगोर और इंडियन सोसायटी ऑफ ओरिएंटल आर्ट के सम्पर्क में आ गए।

सन् 1921 ई0 में सेन साहब ने अंग्रेजी में एम0ए0 उत्तीर्ण किया और सन् 1923 से सन् 1925 ई0 तक पटना में आप अंग्रेजी शिक्षण का कार्य करते रहे। शीघ्र ही अर्थात् सन् 1925 में असित कुमार हल्दार के कला एवं शिल्प महाविद्यालय, लखनऊ में प्रधानाचार्य के रूप में कार्य–भार ग्रहण करने के एक वर्ष बाद सन् 1926 ई0 में वीरेश्वर सेन लखनऊ आ गए और यहाँ उप प्रधानाचार्य के रूप में कार्य करते हुए अपनी रचना में निमग्न रहे और लखनऊ की कला में एक महत्त्वपूर्ण अध्याय जोड़ दिया।[2] आरम्भ में आपके आकृतिमूलक चित्रों में कुछ प्रभाव मुगल चित्रों का भी देखा जा सकता है पर आगे के चित्र उन प्रभावों से मुक्त है और दृश्यों पर केन्द्रित होने के बाद तो दिशा ही बदल जाती है। आकृतिमूलक चित्रों में मानवाकृतियों की रचना अति धैर्यपूर्वक और भावानुकूल है साथ ही नारी–आकृतियों में सौष्ठव का पूरा ध्यान रखा गया है। 1956 से 1958 तक सैण्ट्रल डिजाइन सैण्टर, लखनऊ के निदेशक भी नियुक्त हुए।

यह एक स्थापित तथ्य है कि पहाड़ी दृश्यों को जब कोई कलाकार अपना रचना–विषय बनाता है तब उसे कलाकार निकोलस रोरिक के आगे कुछ विशेष स्थापित कर अपनी एक पहचान बनानी पड़ती है, जोकि वीरेश्वर सेन ने किया। सेन के

चित्रों में एक वातावरण सृजित होता है, जिसमें किसी क्षण विशेष को पढ़ा जा सकता है। इनमें प्रकाश के विस्तार और विरोधाभासी प्रभाव को बहुत ही बारीकी से आत्मसात और अभिव्यक्त किया गया है। कम अथवा अधिक करके उसके संतुलन के विषय में सोचा नहीं जा सकता। वीरेश्वर सेन की कला–यात्रा में अमूर्तता शनैः शनैः आती हुयी दिखाई पड़ती है व फलक को विस्तार प्रदान करती है। वह पूरे फलक पर सविस्तार काम करते–करते कब फलक का बड़ा भाग सपाट रंगों से भरने लगते हैं, यह जानना उनकी यात्रा का गहन साक्षात्कार करना है।

सेन महोदय ने लगभग सभी वर्ण–विधानों में कार्य किया है। आपने पहाड़ी जीवन को अति निकट से देखा और जिया है। उन्नत पहाड़, अवनत घाटियाँ, इन दोनों के अन्तराल में किन–किन मौसमों, परिस्थितियों और क्षणों में क्या–क्या, कब–कब घटित हो सकता है, सेन का चित्रण–विषय बन चुका है। पहाड़ी अवशेषों और परिप्रेक्ष्य को तो जैसे वीरेश्वर आत्मसात कर चुके हैं, जिसमें सामने खड़े होकर दर्शक उस वातावरण में खो जाता है।

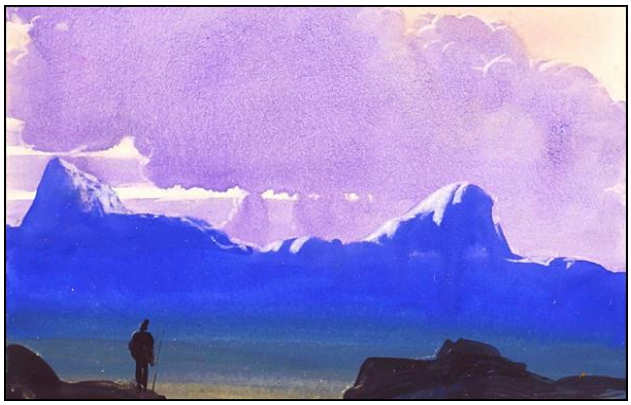

चित्र सं0 1

चित्र सं0.1 में श्री सेन कृत जल रंग की विशेषताओं को देखा जा सकता है, जिसमें एक पर्वतारोही पर्वतीय निसर्ग के सौन्दर्य में खोया हुआ चित्रित किया गया है। नीले–काले वर्ण के संयुक्त प्रभाव से पर्वतीय शोभा देखते ही बनती है। आकाश में ऊपर की ओर जामुनी रंग की विभिन्न तानों से बादलों का अंकन किया गया है। पर्वतारोही एवं अग्रभूमि में अंकित चट्टानों को गहरे रंगों में बनाया गया है।

चित्र सं0 2

इसी प्रकार चित्र सं0.2 में एक साधु को तपस्या में निमग्न दिखाया गया है। चित्र की अग्रभूमि में एक पर्वतीय चट्टान पर साधु तपस्यारत है। उसके पीछे एक झील का मनोरम दृश्य है। झील के किनारे साधु अध्यात्म की अनुभूति करते हुए देखा जा सकता है। पृष्ठभूमि में नीले रंग की हल्की–गहरी तानों से पर्वतीय सुषमा का जल रंग में अद्वितीय अंकन किया गया है।

भारतीय कला के पुनर्जागरण क्रम में भी श्री सेन के विशुद्ध दृष्टिकोण को स्वस्थ एवं चेतना के विकास में महत्त्वपूर्ण माना गया। आपने वॉश, जल रंग व टैम्परा को ही माध्यम माना। आपके द्वारा तैल रंग लगभग अछूता ही रहा।[3] वीरेश्वर सेन मुख्य रूप से दृश्य–चित्रकार थे, परन्तु उनकी कृतियों की प्रमुख विशेषता उनका अति लघु आकार था। ये दृश्य–चित्र ताश के पत्तों से भी अधिक छोटे आकार के होते थे। इनका सबसे अद्भुत पक्ष यही था कि इतने छोटे आकार में भी प्रकृति का असीमित प्रसार, हवा का हल्कापन, पारदर्शिता, प्राकृतिक प्रकाश की बहुविध क्रीड़ा, विशाल भारी चट्टानें, हिमाच्छादित पर्वत–श्रृंखलाएं, उनकी गोदी में फलते–फूलते वृक्ष, मानवीय आवासों के समूह, पगडण्डियां भी सम्मिलित हैं।[4] वीरेश्वर के दृश्य–चित्रों की प्रमुख विशेषता है कि उन्होंने अपने चित्रों में प्रकृति के साथ–साथ मानवाकृतियों का संयोजन यथा स्थान पर किया है।

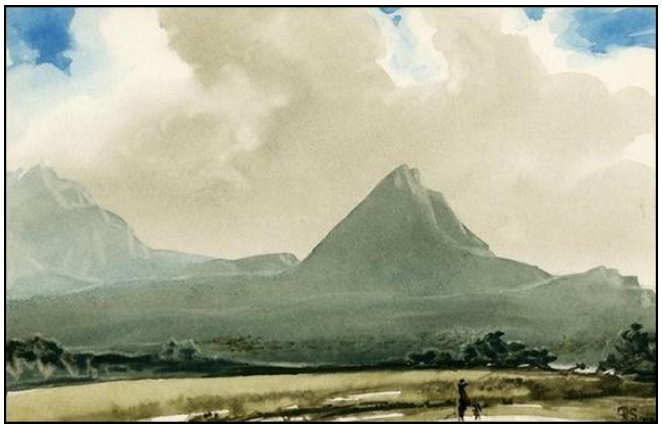

चित्र सं0 3

चित्र सं0.3 में पृष्ठभाग में समधुर तानों के द्वारा जल रंग में पर्वतीय आकारों को संयोजित किया गया है। नीले–स्वच्छ आकाश में रूई के समान उड़ते हुए बादलों का अंकन सहज ही मन को मोह लेता है। अग्रभाग में हरीतिमायुक्त क्षेत्र में एक छोटे बालक के साथ एक अन्य आकृति का अंकन भी देखा जा सकता है। जल रंग की सौम्य तानों से चित्र विशिष्ट प्रभाव प्रस्तुत करता है।

वीरेश्वर सेन ने ने प्रकृति के विस्तार को उसकी मौलिकता और विशिष्टताओं के साथ कागज के छोटे फ्रेम में गागर में सागर की भाँति दर्शाना चाहा है। विजिटिंग कार्ड और पोस्ट कार्ड आकार में ही हज़ारों की संख्या में दृश्य–चित्र बनाए, जिनकी डिटेलिंग का पूरा ध्यान उन्होंने रखा। समस्त चित्रों में यथार्थ परिप्रेक्ष्य का समुचित उपयोग हुआ है। हालांकि प्रमुख माध्यम जल रंग ही था, पर कहीं–कहीं टेम्परा की भाँति भी उसका प्रयोग किया गया है। प्राकृतिक दृश्यों के साथ मानवाकृतियों का इस प्रकार प्रयोग हुआ है, जो परिप्रेक्ष्य में गहराई दिखाने में सहायक सिद्ध होती है।[5]

चित्र सं0.4 में पुनः शीतल वर्ण–योजनाओं में जल रंग के माध्यम से दृश्य–चित्रण को संयोजित किया गया है। पतली–पतली नीलवर्णीय तानों से दृश्य–चित्र को यथार्थ स्वरूप प्रदान किया गया है। बादलों में हल्के गुलाबी रंग का स्पर्श आकाश को भिन्न रूप में दर्शकों के समक्ष प्रस्तुत करता है। अग्रभाग में गहरे रंगों में पहाड़ी चट्टानों के समीप से मानवाकृतियाँ गुजरती हुई चित्रित की गई है।

चित्र सं0 4

चित्र सं0 5

चित्र सं0.5 में वीरेश्वर जी के पूर्व में चित्रों की भाँति है। उनकी प्रिय चिर–परिचित वर्ण–योजना में व्यक्तिगत शैली में दृश्य–चित्र को पूर्ण किया गया है। आकाश और धरती के मध्य बड़े ही निराले रूप में हिमाच्छादित पर्वत–श्रृंखलाओं को अत्यन्त शान्त और सौम्य रूप में प्रस्तुत किया गया है। आकाश को स्वच्छ नीला और धरातल पर वनस्पति युक्त पहाड़ी चट्टानों को संयोजित किया गया है, जिन पर मानव एवं पशु–आकृतियाँ गतिरत हैं। प्रकृति का सम्भवतः ही कोई ऐसा रूप रहा हो, जिस पर आपकी तूलिका ना चली हो। पल–पल बदलते मौसम और छाया–प्रकाश की अठखेलियों को सहज ही आपके दृश्य–चित्रों में अनुभूत किया जा सकता है। आपके द्वारा निर्मित चित्र भारतीय आधुनिक दृश्य–कला की महत्वपूर्ण धरोहर हैं। 10 सितम्बर, 1974 की दोपहर को आपकी पार्थिव देह शान्ति की याचना में सदा के लिए शान्त हो गई। प्रकृति चित्रण के प्रति आपका योगदान दशको तक नवोदित कलाकारों को प्रेरित कर उनका मार्ग प्रशस्त करता रहेगा।

संदर्भ

1. भटनागर डॉ0 शेफालीः लखनऊ के चित्रकार और मूर्तिकार, हिन्दी वांऽमय निधि, 53, खुर्शेदबाग, लखनऊ–226004, पृ0सं016
2. मिश्र अवधेशः डेली न्यूज, संस्करण इलाहाबाद, पृ0सं09
3. कला त्रैमासिक, अंक–1, जनवरी, 1975, पृ0सं019
4. भटनागर डॉ0 शेफालीः लखनऊ के चित्रकार और मूर्तिकार, हिन्दी वांऽमय निधि, 53, खुर्शेदबाग, लखनऊ–226004, पृ0सं016
5. मिश्र अवधेशः उत्तर प्रदेश में भू–चित्रकारी, उत्तर प्रदेश (मासिक पत्रिका), पृ0सं042

Creative Commons (CC) License
This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.